11-2-67 ओम शान्ती रात्री क्लास

बच्चे अब जान गये है दुनियां में ऐसा कोई मनुष्य नही जिनको यह पता हो भगवान मनुष्य सृष्टी कैसे रचते है। एक भी नही सिवाय तुम ब्राहम्णों के। सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह बातें सबे सिवा और कोई नही जानते। भगवान हुआ रचता। तो हो गया बाप। अच्छा वर्सा कौनसा मिलता है बाप से। काका चाचा आद से तो वर्सा मिलता नही। वर्सा मिलता ही है बाप से। बाप खुद बैठ समझाते है मैं कैसे रचता हूं। ब्रहमा दवारा रच कर फिर विष्णु दवारा पालना कराता हूं। ब्रहमा से ब्राहम्ण ब्राहम्णियों को रच फिर इनको पढ़ा कर फिर इनको पद प्राप्त कराता हूं। बाप आते है नई दुनियां रचने। पुरानी दुनियां को खलास करवा देते है। गाया हुआ है ब्रहमा दवारा स्थापना शंकर दवारा विनाश। अन्धों की लाठी बताना है। बाप आकर बच्चों को ऐडाप्ट करते है। कितने ढेर ब्राहम्ण ब्राहम्णियां है। बाप ने बच्चे रचे उनको खाने के लिये तो देंगे ना। तुम बाप खाने के लिये क्या देते है? (राजभाग) बात बहुत सहज है। सिवाय= रावण के राज्य में कितने धक्के खाते है। राम बाप के राज्य मे कितना सुख पाते हो। तो ऐसे बाप को याद करना चाहिये ना। भक्ति मार्ग मे सब ईश्वर को वारिस बनाते है। ईश्वरअर्थ दान-पुण्य करते है। ईश्वर अर्थ क्यूं कहते हो? समझते है ईश्वर देंगे दूसरे जन्म में मिलेगा। तो उनको देते है वर्सा लेने ना। यहाँ भी डायरेक्ट ईश्वर को देते है। वारिस बनाते है तो फिर 21जन्मो लिये ईश्वर देते है। धर्मात्मा मनुष्य पैसा करते है ईश्वर अर्थ। सो मिलता है एक जन्म के लिये। अब बच्चे जानते है हम जो देंगे तो बाबा 21 जन्मों के लिये देंगे सतयुग में। फर्क हो गया ना। परन्तु जब यह राज बुधी मे अच्छी रीती बैठे तब ना। तुम जानते हो हमने 84 पूरे किये है। रावणने पतित बना दिया है। फिर बाप पावन बनाने पुरुषार्थ कराते है। दुनियां मे मनुष्य भगवान को ही नही जानते तो दुनियां है, मनुष्य सृष्टी कैसे रची यह कैसे जान सकते है। बाप आकर रचता और रचना की आद मध्य अन्त का राज समझाते है। तुम पढ़ते रहते हो। पीछाड़ी मे मूल तन्त बुधी मे आ जावेगा। फिर 21जन्म लिये प्रालब्ध मिल जाती। ओम

12-2-67 रात्री क्लास:- देही अभिमानी रहने का तो बहुत ही पुरुषार्थ करते है। आत्मा इन आर्गन्स दवारा आत्माओं से बात करती है। ऐसी रुहानी क्लास बाप ही आकर सिखाते है। इसमें है मेहनत। ऐसे प्रैक्टिस करते रहना है। हम आत्मा ने 84का पार्ट बजाया। अब बाबा ने पावन बनने का तीसरा नेत्र दिया है। इसको कहा जाता है रुहरिहान। तो देह अभिमान निकल जावे। आत्मा बात कर रही है। आत्मा कहती है बाप का हुक्म मिला हुआ है। जैसे बाप आत्माओं से बच्चे-2 कह बात करते है। तुम फिर आपस मे भाई-2 समझो। औरों को भी समझाओ कि अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। आत्मा कहती है यह आर्गन्स अब छोड़ने है। सतयुग मे आत्म अभिमानी होते है। यहां है देहअभिमानी इसलिये प्रैक्टिस बहुत करनी पड़े। आत्मा का नाम आत्मा ही है। वो कब बदलता नही है। शिव बाबा को आत्मा परमात्मा कह फिर नाम रखते है शिव। अपनी आत्मा का नाम तो आत्मा है। शरीर का नाम बदलता है। ऐसे-2 भी विचार सागर मथन होता है। मैं आत्मा इस शरीर से यह करता हूं। यह याद रख सकती है। आत्मा अभिमानी बनने से फिर पाप नाश हो जाते है। और फिर तुम अपने को ईश्वरिय सन्तान भी समझते हो। आयु भी बड़ी हो जाती है। आत्मा कहती है इस शरीर की भी सम्भाल करनी है। क्यूं कि इन दवारा नालेज मिलती है। ज्ञान का सागर बन रहे हो। परन्तु सागर तो एक है। मास्टर सागर कहला सकते है। इसको कहा जाता है विचार सागर मथन करना। जिससे ज्ञान की पुआईन्टस निकलती है। यह निश्चय है अब यह शरीर छोड़ना है। नंगे आये है अब नंगे जाना है। यह बहुत प्रैक्टिस करनी पड़े। मुश्किल ही कोई कोशिश करते है। शरीर छोड़ा हुआ है ऐसे देहीअभिमानी होकर रहना पड़ता है। आत्मअभिमानी बनना है फिर भविष्य मे भी आत्म अभिमानी बनेंगे। फिर देह की परवाह नही रहती। शरीरों को तो छोड़ना ही है ऐसे-2 विचार सागर मथन करने से अपनी उन्नती भी होती है खुशी भी होती है। आत्म अभिमानी होकर रहने से बाप की भी याद आवेगी। यह पुराना चोला तो अब फैंक देना है अब जाना है अपने घर। अभी तुम मेहनत करते हो जिनका ईनाम तुमको विश्व की बादशाही मिलती है। गुड नाईट